7 SEP 2019

दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-XIII/V (प्रश्नपत्र-1 : संपूर्ण पाठ्यक्रम)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (N-M, J-S)–M–HL13/5

Name: Ravi Kumar Sihag **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** Awake-19/B001

Center & Date: Delhi 07/09/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 1111762

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*
*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*
*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में थियोसोफिकल सोसाइटी का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भारत में मद्रास के अड्यार में अपनी कार्यालयी गतिविधियों को शुरू कर 'ऐनीबेसेंट' जैसी महान नेतृत्वकर्ता के सान्निध्य में थियोसोफिकल सोसाइटी ने अपनी विचारधारा के द्वारा भारतीय संस्कृति, धर्म के पुनरुत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हिन्दी भाषा का प्रचार-प्रसार भी सांस्कृतिक प्रचार का प्रमुख अंग था।

ऐनीबेसेंट का योगदान :-

① वाराणसी में 'सेन्ट्रल हिन्दू कॉलेज' की स्थापना। जो आगे चलकर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में पर्यवसित हो गया। यहाँ पर हिन्दी का अध्ययन प्रमुख रूप से होता था।

② हिन्दू कन्या विद्यालय की स्थापना।

③ होमरूल आंदोलन के द्वारा देशभर में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

स्थानीय कमेटियों के द्वारा हिन्दी भाषा का प्रचार प्रसार किया।

④ 1918-1921 में दक्षिण भारत में घूम-घूमकर हिन्दी का प्रचार किया। उनका विचार था -

"मेरे विचार में हिन्दी भारत की प्रमुख (संपर्क) भाषा होनी चाहिये। मेरे विश्वास में हिन्दी भारत में अनिवार्य रूप से पढ़ाई जानी चाहिये।"

इस प्रकार स्वयं ऐनीबेसेंट और साथ में उनके समर्थकों (प्रमुखत: होमरूल आंदोलन के समय) ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अपना प्रमुख योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) साहित्यिक अवधी की सीमाएँ

अपनी मूल प्रवृत्ति में गंभीरता व औदात्य को धारण करने के साथ-साथ सामासिक प्रवृत्ति को भाषा होने के बावजूद अवधी भाषा कुछ सीमाओं से युक्त है।

① आधुनिक जीवन हेतु उपयुक्त नहीं - मध्यकाल में प्रबंध काव्यों व सूफी प्रेमाख्यानों में प्रयुक्त होने के कारण अवधी आधुनिक जीवन की जटिलता, तनाव व तल्खी को धारण नहीं कर पाती।

② लयात्मकता, संगीतात्मकता व तन्मयता का अभाव :- रामकथा से जुड़ाव के कारण अवधी में शृंगार व संयोग के भाव प्रयुक्ति के स्तर पर अनुचित प्रतीत होते हैं। ~~स्वयं~~

③ मुक्तकों वाली तेजी नहीं : प्रबंध काव्यों में प्रयुक्त होने के कारण अवधी धीमेपन को धारण करती है। स्वयं तुलसीदास ने अवधी में रामचरितमानस रचने के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

बाद मुक्तकों की रचना (कवितावली) ब्रज भाषा में की है।

④ इतनी भी अधिक सामासिकता नहीं- ब्रज से साम्यता रखने के बावजूद अवधी भाषा वह दर्जा हासिल न कर पाई जो दर्जा (अखिल भारतीय काव्यभाषा) आगे चलकर ब्रज को प्राप्त हुआ।

⑤ शृंगार, संयोग, वात्सल्य जैसे भावों हेतु उपयुक्त नहीं।

इस प्रकार अवधी की उपर्युक्त कमज़ोरियों ने रीतिकाल व आधुनिक काल में क्रमशः ब्रजभाषा व खड़ी बोली हिन्दी को प्रधान भाषा बनाया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 19वीं शताब्दी में 'खड़ी बोली' के विकास में प्रेस की भूमिका

किसी भी भाषा को प्रयोजनमूलक बनाने के लिये उसका प्रचार प्रसार अत्यन्त आवश्यक है और इस कार्य में सहायता के लिये प्रेस का कोई सानी नहीं है। 19 वीं शताब्दी में खड़ी बोली के विकास में भी प्रेस की मुख्य भूमिका रही।

अखबारों की भूमिका :- 1826 में हिन्दी का पहला अखबार / पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन हुआ। इसके अलावा राजा-राममोहन राय ने भी 1829 में बंगदूत अखबार में हिन्दी के पक्ष में प्रचार किया।

आगे चलकर ब्रह्मसमाज के अनेक नेताओं ने विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं द्वारा हिन्दी के पक्ष में आंदोलन चलाया।

1852 में हिन्दी का प्रथम दैनिक समाचार-पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ

-1845 में शिवप्रसाद सितारेहिन्द का 'बनारस अखबार'

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

व्यक्तियों का योगदान जिन्होंने प्रेस के द्वारा खड़ी-बोली का विकास किया-

① राजा राममोहन राय
② सदा सुखलाल जी
③ बालकृष्ण भट्ट - 'हिन्दी प्रदीप' (पत्र)
④ प्रताप नारायण मिश्र = ब्राह्मण (पत्र)
⑤ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र = बालाबोधिनी, कविवचन सुधा, हरिश्चन्द्र मैगजीन व हरिश्चन्द्र चन्द्रिका (1874) जैसे तत्व।

- साथ ही भारतेन्दु ने हिन्दी भाषा को हिन्दुस्तानी के रूप में नई शैली भी प्रदान की - 'हिन्दी नये चाल में ढली 1873 में'।

इस प्रकार प्रेस ने गुणात्मक व मात्रात्मक रूप से खड़ी बोली हिन्दी के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बोली को भाषा का दर्जा दिये जाने हेतु उपयुक्त कसौटियाँ

बोली व भाषा में प्रमुख अंतर भाषा-वैज्ञानिक' न होकर समाजभाषा वैज्ञानिक स्तरों का होता है। अपने मूल रूप में समान होकर भी भाषा का स्तर, प्रयुक्ति क्षेत्र बोली से बड़ा होता है।

आज के समय में जहाँ राजस्थानी, अवधी, ब्रज, भोजपुरी जैसी बोलियों द्वारा भाषा का दर्जा दिये जाने के आंदोलन सामने आ रहे हैं तो निश्चित कसौटियों के आधार पर फैसला करना आवश्यक हो जाता है-

① उस बोली के प्रयोक्ता वर्ग अधिक हों।

② उस बोली का निश्चित व्याकरण हो, जो मानक हो।

③ उस बोली का प्रयुक्ति क्षेत्र व्यापक होना चाहिये।

④ उस बोली की एक विशिष्ट लिपि होनी चाहिये। जैसे- हिन्दी की देवनागरी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

लिपि है तो मैथिली की तिरहुत लिपि।

(5) बोली में साहित्य की रचना पर्याप्त रूप से हुई होनी चाहिये।

(6) बोली का स्वरूप ऐसा हो कि उसमें आधुनिक जीवन, ज्ञान-विज्ञान, व्यापार, वाणिज्य आदि के विभिन्न व्यवहार किये जा सके।

(7) बोली में तकनीकी प्रयोगों को किया जा सके।

इन्हीं कसौटियों पर खरा उतरने पर ही किसी बोली को भाषा का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिये।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में लाला लाजपतराय का योगदान

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में 'गरम-दल' (कांग्रेस) के प्रमुख नेता लाला लाजपतराय ने राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ हिन्दी के विकास में भी प्रमुख भूमिका निभाई।

① आर्य समाज से जुड़कर (इसका पांचवा नियम हिन्दी पढ़ना था) विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों की स्थापना की।

② 'पंजाब शिक्षा संघ' के सभापति होने के नाते पंजाब विश्वविद्यालय में हिन्दी को अनिवार्य बनाया।

③ रत्न व प्रभाकर के माध्यम से हरियाणा के विभिन्न संस्थानों में हिन्दी का प्रचार किया।

④ 'राष्ट्रीय शिक्षण विद्यालय' से जुड़कर लाखों स्वयंसेवकों को तैयार किया।

⑤ विभिन्न राष्ट्रीय आंदोलनों जैसे-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

स्वदेशी आंदोलन आदि के माध्यम से हिन्दी का प्रचार किया।

⑥ हिन्दी के पक्ष में पत्र - पत्रिकाओं, लेखों के माध्यम से आंदोलन चलाया।

इस प्रकार इन्होंने पुरुषोत्तमदास टंडन (हिन्दी सेवी) जैसे नेताओं के साथ मिलकर हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अप्रतिम योगदान दिया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'पूर्वी हिंदी' और 'पश्चिमी हिंदी' की व्याकरणिक भिन्नताओं पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) मानक हिंदी की कारक-व्यवस्था पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

किसी भी वाक्य में संज्ञा, सर्वनाम व क्रियापदों का निश्चित क्रम में स्थान ग्रहण करने की व्यवस्था को कारक व्यवस्था कहते हैं। उदाहरण-

'राम ने रावण को मारा।'

प्रमुख विशेषताएँ

① हिन्दी की कारक व्यवस्था संस्कृत की व्यवस्था पर आधारित है। संस्कृत के सभी कारक हिन्दी में मौजूद हैं।

② संस्कृत के विभक्तियों की बजाय हिन्दी के कारक परसर्गों पर आधारित है।

③ संस्कृत के कारक जहाँ ~~लिंगवचनसापेक्ष~~ 'लिंगवचननिरपेक्ष' थे वहीं हिन्दी के कारक परसर्गों पर आधारित होने के कारण 'लिंगवचन सापेक्ष' हैं।

हिन्दी की कारक व्यवस्था के प्रमुख कारकों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

का परिचय निम्न काव्यांश से दिया जा सकता है-

"कर्ता 'ने' अरु करण 'को', करण 'से' जान
संप्रदान 'को' 'के लिये', अपादान 'से' मान
'का', 'के', 'की' संबंध में, 'में', 'पै' 'पर', अधिकरण
'हे', 'ओ', 'अरे' संबोधन, यही विभक्ति स्मरण।"

हिन्दी के प्रमुख कारक

① कर्ता कारक :- वह कारक जो क्रिया को करता है।
विभक्ति = 'ने'

② कर्म कारक :- वह कारक, जिसके प्रति क्रिया की जाती है।
विभक्ति = को

③ करण कारक :- क्रिया के साधन के रूप में प्रयुक्त होने वाला कारक
विभक्ति = से

④ संप्रदान कारक :- कर्ता की क्रिया का उद्देश्य

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यही कारक होता है।
विभक्ति :- के लिये।

(5) अपादान कारक :- वह कारक जो क्रिया में क्रिया का आधार होता है किन्तु बाद में क्रिया उससे अलग हो जाती है। उदाहरण-
'पेड़ से पत्ता गिरता है।'
विभक्ति 'से'।

(6) संबंध कारक :- वह कारक जो क्रिया का भौगोलिक, कालिक व मानसिक आधार होता है।
विभक्ति :- में, पे, पर।

(7) अधिकरण कारक :- वह कारक जो क्रिया का भौगोलिक, कालिक व मानसिक आधार होता है। जैसे - सीता राम 'पर' आश्रित है।

(8) संबोधन कारक :- इसमें कर्त्ता को संबोधित करने के लिये परसर्गों का प्रयोग किया जाता है। इस कारक में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

परसर्ग कारक से पहले प्रयुक्त होता है। साथ ही, इसमें बहुवचन के साथ अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता है, जैसे - 'हे साथियो!'

अन्य नियम

1. परसर्गों को संज्ञा से अलग लिखा जाता है जैसे - 'राम ने सीता से विवाह किया'।
2. परसर्गों को सर्वनाम से अलग नहीं लिखा जाता है, जैसे 'उसने यह कार्य किया।'
3. कारक क्रम :-

संबोधन > कर्त्ता > अधिकरण > संबंध > अपादान > संप्रदान > करण > कर्म।

इस प्रकार हिन्दी की कारक व्यवस्था वस्तुनिष्ठ व वैज्ञानिक है जो संस्कृत के सरलीकरण की प्रक्रिया व हिन्दी की अपनी विशेषताओं का उत्पाद है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरपूर्वयुग में साहित्यिक भाषा के रूप में ब्रजभाषा के विकास पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में भक्तिकाल व रीतिकाल का युग ब्रजभाषा के चरम विकास का युग माना जाता है किन्तु भक्तिकाल में सूरदास से पूर्व भी ब्रजभाषा का विकास दिखाई पड़ता है।

ब्रजभाषा का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है किन्तु यह अवधी जैसी भाषाओं से समानता रखती है। इसका व्युत्पत्ति क्षेत्र भी दिल्ली, आगरा, मथुरा जैसे क्षेत्र हैं जो ब्रजमंडल के नाम से विख्यात है।

आरंभिक ब्रजभाषा का विकास रोडा कृत 'राउलवेल' में, पण्डित दामोदर शर्मा कृत 'उक्ति-व्यक्ति प्रकरण' में दिखाई पड़ता है।

इसके बाद खुसरो के भाषिक ग्रन्थों- खलिकबारी, मुकरियाँ आदि में ब्रजभाषा के निदर्शन होते हैं जैसे-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

"मेरा मोसे सिंगार करावत,
आगे बैठ कर मान बढ़ावत
वासे चिक्कन न कोऊ दीसा,
ऐ सखि! साजन, ना सखि! सीसा॥"

प्रयुक्त मुकरी में 'मेरा', 'मोसे', 'करावत', 'वासे' जैसे शब्द ब्रजभाषा का आभास देते हैं। एक अन्य उदाहरण द्रष्टव्य है-

"खुसरो रैन सुहाग री, जागी पी के संग
तन मेरो मन पीऊ को, दोऊ भये एक रंग।"

इसमें भी 'पी', 'मेरो' जैसे शब्द ब्रजभाषा का दिग्दर्शन कराते हैं। इसी आधार पर आचार्य शुक्ल को कहना पड़ा -

"क्या उस समय तक भाषा घिसकर इतनी चिकनी हो गई थी जो अमीर खुसरो की पहेलियों में मिलती है।"

इसी प्रकार खुसरो के पश्चात प्रमुख भक्त कवियों जैसे नामदेव,

कृपया इस स्थान में ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

रामानंद आदि की रचनाओं में भी ब्रजभाषा के तत्व मिल जाते हैं। सिक्ख धर्म के पाँचवें गुरु अर्जुनदेव की निम्न पंक्ति भी ब्रजभाषा का एहसास करती है-

"जन्म जन्म का बिछुड़िया मिलिया
साध क्रिया ते सूखा हरिया।"

अतः सूरदास का आगमन भले ही ब्रज-भाषा के पूर्ण विकास का प्रस्थान बिन्दु हो किन्तु उससे पहले के काव्य में यह पूर्णतः अनुपस्थित नहीं है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) व्याकरण के धरातल पर हिंदी की विभिन्न बोलियों के पारस्परिक संबंध पर प्रकाश डालिये। 15

पार्श्व में निहित क्रम के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हिन्दी की बोलियाँ विकास के क्रम में एक समान अवस्था से गुजरी है। सभी बोलियाँ अपभ्रंश से विकसित हुई है अतः उनके बीच अनेक स्तरों पर संबंधों के दर्शन होते हैं।

ध्वनि के स्तर पर संबंध

पालि
↓
संस्कृत
↓
अपभ्रंश
↓
विभिन्न अपभ्रंशों का विकास
↓
विभिन्न उपभाषा वर्ग
+
बोलियाँ व भाषाएँ

भाषा विकास क्रम

① हिन्दी के सभी बोलियों में स्वरों व व्यंजनों के स्तर पर समानता पाई जाती है। कुछ स्तरों पर ध्वनि परिवर्तन भी सभी बोलियों में विद्यमान है जैसे -

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(क) ऋण का परिवर्तन –
- अवधी में 'रि'
- अन्य में 'अ', 'इ', 'उ' में परिवर्तन
उदाहरण – गृह – गेह।

(ख) 'वर्णों' में परिवर्तन
- व - ब – विश्व - बिस्व (अवधी)
- श | ष - 'स' – भाषा - भासा (अवधी व ब्रज)
- ण - न – ब्रज व अवधी
- न - ण – खड़ी बोली।

(ग) सभी बोलियों में स्वरभक्ति, स्वरसंकोच व 'क्षतिपूरक दीर्घीकरण' की प्रक्रिया चली है जैसे –
- चक्र - चक्क - चाक
- कार्य - कारज - काम

व्याकरण स्तर पर

① सर्वनाम स्तर पर सभी में –
उत्तम पुरुष – 'म' व 'ह' वर्ण
मध्यम पुरुष = 'त' वर्ण
अन्य पुरुष = 'य' व 'व' वर्ण

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

② क्रिया स्तर पर
- भूतकाल में - 'त' व 'थ' वाले वर्ण
उदा० करत, करता था।
- भविष्य में - 'ग' रूप
होवैगा (ब्रज), होगा (खड़ी बोली)

③ कारक के स्तर पर
कर्म, संबंध - 'क' वर्ण प्रधानता सभी में।
करण, अपादान = 'स' वर्ण सभी में
अधिकरण - 'ह' व 'म' वर्ण सभी में।

④ इसी प्रकार सर्वनाम में अवधी में तीन रूप तो कन्नौजी में भी तीन रूप मौजूद हैं।

③ शब्दकोशीय स्तर पर :- शब्दकोशीय स्तर पर हिन्दी के सभी बोलियाँ संस्कृत के तत्सम शब्दों के तद्भव रूप व देशज शब्दों से बनी है।

इस प्रकार हिन्दी की बोलियों में बहनों वाला संबंध है जो इतिहास की सम-प्रक्रियाओं द्वारा प्रमाणित है।

कृपया इस स्थान में ... कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this ...)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

अवधी भाषा का जन्म अर्धमागधी प्राकृत से हुआ है व यह अयोध्या के आसपास के क्षेत्र में बोली जाती है।

अर्धमागधी प्राकृत
↓
अर्धमागधी अपभ्रंश
↓
पूर्वी हिन्दी उपभाषा
↓
अवधी

मध्यकाल में सूफियों के आगमन के बाद संयोग यह हुआ कि सूफी प्रेमाख्यानों के लिये दोहा - चौपाई की शैली में अवधी भाषा रूढ़ हो गई। इस सन्दर्भ में सूफी कवियों ने अपने तसव्वुफ दर्शन के प्रतिपादन के लिये अवधी का प्रयोग किया।

प्रयोग का पहला उदाहरण 15वीं शताब्दी में 'मुल्लादाऊद' की 'चंदायन' या लोरिकहा है। भाषा कितनी मधुर हो सकती है, इसका प्रमाण निम्न काव्य-पंक्तियों में देखा जा सकता है-

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

"पाऊद कवि सो चांदा गाइ
जेई रे सुना सो गा मुरझाई।"

किन्तु मलिक मोहम्मद जायसी का आगमन अवधी के लिये महत्वपूर्ण था। इन्होंने पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम जैसे चौदह ग्रन्थों में अवधी का प्रयोग कर इसे साहित्य भाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

जायसी के भाषायी प्रयोग

(i) अवधी में जेहि, तेहि जैसे पूर्वी प्रयोग।

(ii) तत्सम शब्दों का अवधीकरण जैसे -
- पृथ्वी - पुहुमि।
- भोग - जोग।

(iii) मुहावरों का प्रयोग
- 'सूधि अंगुरी न निकसे घीऊ'
- 'हिय फटा।'

(iv) लोकशास्त्रों का प्रयोग जैसे -
- नैन चुवई जस महावट नीरू।
- दवगरा।

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार जायसी ने अपनी कलात्मकता व रचनादृष्टि से एक झटके में अवधी को चरम तक पहुँचा दिया। इनके काव्य में लोक बिम्बों, संगीतात्मकता की चरम दृष्टि मिलती है जैसे-

"यह तन जारौं छार के, कहौं कि पवन उड़ाव
मकु तेहि मार्ग उड़ि परै, कन्त धरै जहँ पाँव।"

जायसी की इसी कला पर मोहित होकर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं-
"जायसी की भाषा बहुत ही मधुर है। पर उसका माधुर्य निराला है। वह भाषा का माधुर्य है, संस्कृत का माधुर्य नहीं। वह संस्कृत की कोमलकांत पदावली पर अवलंबित नहीं।"

जायसी के पश्चात भी अनेक सूफी कवियों ने आगामी शताब्दियों में अवधी में रचना की। उदाहरण के लिये कासिम शाह - हंस जाव जवाहिर, नूर

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मुहम्मद की 'इन्द्रावती', शेख नबी की ज्ञानदीप आदि। किन्तु आचार्य शुक्ल के अनुसार इन कवियों की रचनाओं में संस्कृत के शब्दों का प्रयोग अधिक है। शेख नबी की कविता का अंश है-

"ललित रच्य जो आखर गाढ़े
चुनि- चुनि अमरकोश से काढ़े।"

इस प्रकार अवधी के विकास में सूफियों का महत्व इतना ही है जितना तुलसीदास का। इसी आधार पर मध्यकाल में अवधी एक प्रमुख भाषा थी।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिंदी के मानकीकरण के क्षेत्र में व्याकरण संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी भाषा के मानकीकरण से तात्पर्य उच्चारण, शब्दावली, व्याकरण व लिपि सभी के स्तर पर भाषा को शुद्ध, परिमार्जित व मानक बनाने से है। व्याकरण के स्तर पर प्रमुख स्तरों पर मानक होने के बावजूद हिन्दी के मानकीकरण में कुछ समस्याएँ हैं जो निम्न हैं-

① **संज्ञा संबंधी समस्या** :- हिन्दी की कुछ बोलियों में अभी भी संज्ञा के तीन रूप चलते हैं जैसे - अवधी।
- घोरा, घोरवा, घोरवना।

इसके साथ ही संज्ञा के तिर्यक रूपों में 'ए' प्रत्यय लगाने की परंपरा कई जगह विद्यमान है जैसे-
- 'मामे की दुकान से'

② **सर्वनाम संबंधी** :- सर्वनामों के स्तर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

पर पुरुषवाचक सर्वनाम में मध्यम पुरुष में कई जगह 'तू' का प्रयोग नहीं होता तो बिहारी हिन्दी में 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग होता है।

③ **क्रिया के स्तर पर** :- क्रिया के कई अमानक रूप अभी भी प्रचलित है जैसे -

मानक		अमानक
किया	-	करा
की	-	करी

- कई जगहों पर क्रिया के स्तर पर विकारात्मकता का भी दर्शन होता है जैसे - "मुझे देखने चाहती है।"

④ **कारक व्यवस्था में समस्या** - पूर्वी हिन्दी में कर्ता के साथ 'को' प्रत्यय लगाने की परंपरा है जैसे -

"हमको उसको छोड़ना है।"

साथ ही सर्वनाम के साथ परसर्ग के

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रयोग में भी अशुद्धता विद्यमान हैं जैसे-

मानक — अमानक
मुझे — मेरे को

⑤ **लिंग संबंधी** :- लिंगों में लिंग निरपेक्ष शब्दों जैसे - दही, आत्मा, वायु के संबंध में भ्रान्ति है क्योंकि नपुसकलिंग का अभाव है।
— राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जैसे पदनामों को लेकर भी लिंग निर्धारण समस्या है।

⑥ **अप्रत्यक्ष कथन** :- अंग्रेजी के प्रभाव में हिन्दी में भी अशुद्ध प्रयोग आया है -
'उसने कहा कि वह जायेगा।'(अशुद्ध)
उसने कहा कि मैं जाऊँगा। (शुद्ध)

इस प्रकार उपर्युक्त स्तरों पर मानकीकरण में समस्या है किन्तु इन्हें सुलझाने के स्तर पर भी विभिन्न संस्थाएँ व सरकार कार्यशील हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) देवनागरी लिपि के नामकरण पर प्रकाश डालिये।

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवनागरी लिपि के नामकरण को लेकर विभिन्न भाषा-वैज्ञानिकों में मतभेद है। कुछ विद्वान इसके 'देव' शब्द को लेकर उत्पत्ति की व्याख्या करते हैं तो कुछ विद्वान नागरी शब्द को लेकर।

जो विद्वान 'देव' शब्द के आधार पर व्याख्या करते हैं, उनके अनुसार 'देव-वाणी' संस्कृत से ~~उ~~ उत्पन्न होने के कारण यह देवनागरी कहलाई। कईयों के अनुसार 'देवनगर' अर्थात 'काशी' में उत्पन्न होने के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

'नागरी' शब्द के आधार पर व्याख्या करने वाले कई विद्वान इसे नगरों से उत्पन्न बताते हैं तो कई विद्वानों के अनुसार गुजरात के नागर ब्राह्मणों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के द्वारा इसका विकास हुआ।

उपर्युक्त व्याख्याओं के अनुसार अलावा अन्य व्याख्याएँ भी है जैसे देवनागर नामक पदार्थ जो चौकोर आकृति का तावीज के आकार का पदार्थ होता है, उस पदार्थ पर लिखे टेढ़े-मेढ़े अक्षरों से इसका विकास हुआ है। इसके अलावा गुप्तशासक चन्द्रगुप्त द्वितीय जो कि 'देव' नामक उपाधि से सुसज्जित थे, के नगर पाटलिपुत्र में विकसित होने के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

उपर्युक्त सभी व्याख्याओं का विचार-विमर्श व मंथन करने के बाद उपर्युक्त निष्कर्ष यही निकाला जा सकता है कि देववाणी अर्थात् संस्कृत से विकसित होने के साथ-साथ नागर विद्वानों के द्वारा इसका विकास किया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

गया होगा। इसी कारण से यह लिपि देवनागरी कहलाई होगी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कहानी का रंगमंच'

कहानी के रंगमंच से तात्पर्य विभिन्न कहानियों को नाट्यविधा के रूप में मंच पर मंचित करने से है। यह साहित्य की एक विधा का दूसरे में अनुचित मेल कराने का दोष नहीं है, बल्कि हिन्दी रंगमंच का और अधिक सृजनात्मक प्रयोग करने का प्रयास है।

सर्वप्रथम देवेन्द्रराज अंकुर ने दिल्ली विश्वविद्यालय में निर्मल वर्मा की तीन कहानियों - डेढ़ इंच ऊपर, पराया लावर आदि का रंगमंच पर प्रस्तुतिकरण किया।

इसके बाद तो अनेक कहानीकारों जैसे- प्रेमचन्द, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, की कहानियों का रंगमंच पर मंचन किया गया।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

रंगमंचीय विशेषता

① न पूर्णतः कहानी, न पूर्णतः नाटक बल्कि दोनों विधाओं का मध्यवर्ती स्वरूप होना।

② केवल कहानी का यथारूप प्रस्तुतिकरण नहीं होता, निर्देशक द्वारा सृजनात्मक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

③ कहानी का पाठ न होकर कहानी में विभिन्न रंग-निर्देशकों का समावेशन कर सुंदर प्रस्तुतिकरण।

इस प्रकार भारतीय रंगमंच में भारतीयता व लोक तत्वों के समावेशन करने की दृष्टि से यह विधा अत्यन्त सुंदर है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'पल्लव' की 'भूमिका' का महत्त्व

सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित 'पल्लव' की भूमिका का हिन्दी साहित्य में वही स्थान है, जो कि पश्चिमी साहित्य में 'विलियम वर्ड्सवर्थ' की 'लिरिकल बैलड्स' का।

महत्व पंत ने इसकी सहायता से निम्न स्थापनाएँ की है -

(i) छायावादी कविताओं की विशेषताओं का वर्णन।

(ii) कविता को नये रूप में परिभाषित करना व आधुनिक कविता के नये प्रतिमान तय करना।

(iii) ब्रज भाषा की जगह खड़ी बोली को महत्व - पंत ने लिखा है-
"अभिव्यक्ति को अब ब्रज की ढीलदार चोली जो कि फट चुकी है, नहीं ढक सकती। अब उसे क्रान्तिकारी के स्वरूप वाला चोला चाहिये।"

(iv) अलंकारों के प्रयोग के संबंध में

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

पंत ने लिखा है कि-

"अलंकार केवल काव्य की सुंदरता के लिये नहीं है बल्कि वे वाणी के विशेष भावद्वार हैं।"

(v) कविता में प्रकृति, सौन्दर्य, स्वतंत्रता, अनुभूति के महत्व को प्रतिस्थापित करना।

इस प्रकार संवेदना व शिल्प के स्तर पर नये प्रतिमानों की स्थापना कर पल्लव की भूमिका हिन्दी साहित्य में एक क्रान्तिकारी महत्व रखती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) अज्ञेय की काव्यानुभूति

अज्ञेय नयी कविता आंदोलन के शिखर रचनाकार हैं। अपनी संवेदना के स्तर पर वे अद्वितीय हैं व निम्न विशेषताएँ रखते हैं।

① व्यक्ति को महत्व :- अज्ञेय व्यक्ति को समाज से स्वतंत्र न बनाकर समाज में स्वतंत्र बनाते हैं।

"हम नदी के द्वीप हैं
हम नहीं कहते कि हमें छोड़ स्रोतस्विनि बह जाये
वह हमें आकार देती है ×××
लेकिन हम बहते नहीं हैं
क्योंकि बहना रेत होना है।"

② गैर-रोमांटिक चेतनाभाव की कविताएँ रचना-

"फूलों को प्यार करो,
मगर झरे तो झर जाने दो।"

③ क्षण को महत्व देना -

"और सब समय पराया है
बस उतना ही पल अपना
तुम्हारी पलकों का उँपना।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

④ अज्ञेय अपनी काव्यानुभूति में प्रकृति में प्रमुख स्थान देते हैं। वे रूसो की तरह प्रकृति के निकट जाना चाहते हैं। उनकी कविता 'असाध्यवीणा' इस दृष्टि से अनुपम है -

"बंधे समय वन बंधुओं की नानाविध आतुर वृक्ष पुकारें
गर्जन घुर्घर चीक चूंक, हुक्का चिचियाहट।"

⑤ अन्ततः अज्ञेय का रचनाकाल अनास्था के भाव (अपने - अपने अजनबी उपन्यास) से लेकर 'आंगन के पार द्वार' रचनासंग्रह (जैन बौद्धमत का प्रभाव तक विस्तृत है।

अतः अज्ञेय की ~~काव्य~~ काव्यानुभूति विशिष्ट व अद्वितीय है जो सत्य की खोज में लीन रहते हुए रचना में प्रविष्ट होती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(घ) छायावाद के नए अलंकार

छायावाद व्यक्तिवाद को महत्व देता है ये कवि समाज की रूढ़िगत धारणाओं से टकराते हैं तो इनकी कविता अभिधात्मक नहीं रह जाती। पुनः भावनाओं के बाहुल्य के कारण रचना में अलंकारों का प्रयोग रम्य हो जाता है। प्रमुख अलंकार निम्न है-

① ध्वन्यार्थ व्यंजना :- ध्वनियों के ~~संग~~ संयोग द्वारा काव्य में संगीतात्मकता के तत्व का आना।

'झर-झर-झर, निर्झर गिरी सर से'
'उठ-उठ री लघु-लघु लोल लहर।'

② विशेषण विपर्यय :- विशेषण का अपने पारंपरिक विशेष्य के बजाय अलग रूप में आना। जैसे -

'वेदना के सुरीले हाथों से'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

③ मानवीकरण :- विभिन्न भावों, अमूर्त वस्तुओं के साथ-साथ प्रकृति को भी मानव रूप में दिखाना। जैसे-

"मैं रति की प्रकृति लज्जा हूँ,
शालीनता सिखलाती हूँ।"

"मेघमय आसमान से उतर रही है
संध्या सुंदरी परी सी
धीरे, धीरे, धीरे।"

इस प्रकार छायावाद में अलंकार चमत्कार के लिये नहीं आये हैं बल्कि भावों की सुंदर व उपयुक्त विवेचना हेतु आये हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) 'परख' उपन्यास की 'कट्टो'

जैनेन्द्र के प्रमुख उपन्यास 'परख' (1930) की मुख्य पात्र कट्टो है। अपने स्वभाव के अनुरूप जैनेन्द्र के नारी पात्र - चाहे वे प्रेम में हो, प्रसन्न हों या व्यथा में हो - उपन्यास के केन्द्र में रहते हैं। कट्टो भी इसी बात का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रमुख विशेषताएँ

1. गांधीवाद व जैनेन्द्र के मनोविश्लेषणवाद का अद्भुत समन्वय कट्टो में दिखाई देता है। 'प्रेम आत्मदान है', 'अहं का विसर्जन है', जैसे भावों व स्वप्नों का प्रतिनिधित्व कट्टो करती है।

2. सरल, निरीह व भावुक :- कट्टो बाल-विधवा है। वह सत्यधन से प्रेम करती है किन्तु सत्यधन के गरिमा से विवाह करने पर भी ईर्ष्या नहीं करती।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बाद में बिहारी को अपने मन में सत्यधन के समक्ष स्थान देती है।

3. त्याग भावना की प्रतिमूर्ति :- सत्यधन को चालीस हजार रुपये देने का प्रसंग है। या बिहारी के साथ वैधव्य यज्ञ रचाने का प्रसंग। कट्टो की त्याग भावना अनन्य है।

इस प्रकार जैनेन्द्र ने कट्टो का चरित्र चित्रण ईश्वरीय प्रतिनिधि के रूप में किया है जो अपनी प्रेम व त्याग भावना से पाठक के मन पर अमिट छाप छोड़ता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) बिहारी रीतिकाल के सर्वश्रेष्ठ कवि क्यों माने जाते हैं? सोदाहरण उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) क्या गोस्वामी तुलसीदास का कलियुग-वर्णन तद्युगीन अमानवीय स्थितियों का ही आख्यान है? सुचिंतित उत्तर दीजिये। 20

गोस्वामी तुलसीदास ने अपनी रचनाओं में - यथा रामचरित मानस, कवितावली में कलियुग का वर्णन किया है जिसमें उन्होंने कलियुग में आने वाली समस्याओं, विपदाओं का चित्रण किया है। न केवल धार्मिक बल्कि आर्थिक व राजनीतिक समस्याओं के स्तर पर भी कलियुग की त्रासदी उनके काव्य में विद्यमान है।

तुलसीदास प्रगतिशील व्यक्ति थे। इस बात को सिद्ध किया है- रामविलास शर्मा ने अपने 'तुलसी का काव्य में सामंत विरोधी' मूल्य नामक निबंध में व विश्वनाथ त्रिपाठी की रचना 'लोकवादी तुलसी' में। जहाँ तुलसी ने कलियुग वर्णन किया है, उसके उदाहरणों में तुलसी के युग की पीड़ा दिखाई दी है।

धार्मिक स्तर पर तुलसी की पीड़ा है कि साधु लोग पाखंडी व दुराचारी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

हो गये हैं। रामविलास शर्मा के अनुसार तत्कालीन धार्मिक आडंबरों का निरावरण तुलसी ने किया है। जैसे-

"विप्र निरच्छर लोलुप कामी
निराचार सठ वर्वली स्वामी।"

तुलसी के अनुसार वर्णाश्रम धर्म का पालन नहीं हो रहा हो यह बात इतिहास सम्मत भी है क्योंकि तत्कालीन मुगलकाल में जाति-व्यवस्था में दरारें आई व कबीर जैसे भक्तों ने निचले वर्गों में चेतना का प्रसार भी किया है। तुलसी ने लिखा है-

"बादहिं सूद्र द्विजन्ह सन, हम तुमते कछु घाटि।
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर, आँखि देखावहि डाँटि।"

इसी प्रकार तुलसी ने आर्थिक स्तर पर अकाल, महामारी, बेरोजगारी व गरीबी का जो चित्रण किया है, वह बात इतिहास सम्मत है। काशी की

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

महामारी का वर्णन तत्कालीन अन्य ग्रन्थों में भी किया गया है -

"कलि बारहि बार अकाल पड़ै
बिनु अन्न दुखी सब लोग मरैं।"

"खेती न किसान को, भिखारी को न बीज बलि,
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी
जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस
कहैं एक एकन सों
कहाँ जाई का करी।"

राजनीतिक स्तर पर भी तत्कालीन समाज में 'सामंती व्यवस्था' विद्यमान थी। इसमें राजा को वैभव-विलास व भोग से ही प्रेम था। प्रजा के सुख-दुख की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। यही वर्णन तुलसी ने किया है जहाँ वे शासक वर्ग की असंवेदना का वर्णन अपने काव्य में करते हैं -

"गोद गवाल नृपाल महि,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

जमन महा महिपाल
सामन दाम न भेद करी
केवल दंड कराल।"

इस प्रकार तुलसीदास का कलियुग वर्णन उनके समय की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व राजनैतिक त्रासदियों का वर्णन है। रामविलास शर्मा ने भी कहा है कि तुलसी ने अपने काव्य के कलियुग वर्णन में अपने समय की स्थितियों का वर्णन किया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'आधे-अधूरे' नाटक की संवेदना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आधे-अधूरे नाटक मोहन राकेश का एक प्रयोगधर्मी नाटक है जिसमें उन्होंने प्राचीन नाट्य परंपरा में सृजनात्मक परिवर्तन करते हुए आधुनिक जीवन के तनाव, तल्खी, संत्रास, विसंगतिबोध, अनिर्णय की स्थिति का हरकत भरी सृजनात्मक व आधुनिक युग की भाषा में सुंदर चित्रण किया है।

राकेश अस्तित्ववादी दर्शन से प्रभावित रहे हैं जहाँ प्रत्येक व्यक्ति अपनी अंतरआत्मा व मूल-स्वभाव के विपरीत जीकर 'वस्तु' का जीवन व्यतीत करता है। साथ ही जीवन में 'जो है' और 'जो होना चाहिये' का अंतराल व्यक्ति को हमेशा तंग करता है।

नाटक में महेन्द्रनाथ व सावित्री इसी दर्शन के पात्र हैं जहाँ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

सावित्री अपने पति को नापसंद कर अनेक अन्य व्यक्तियों से मेल-मिलाप करती है किन्तु अन्त में वापिस अपने पति के पास लौट आती है।

संबंध हीनता व संबंधों की टूटन जो राकेश की कहानियों की विशेषता है, राकेश ने नाटकों में भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। रिश्तों में बिखराव का असर संतानों पर किस प्रकार पड़ता है, यह इस नाटक के बच्चों के व्यवहार द्वारा भली-भाँति व्यक्त हो जाता है।

नाटक की अन्य विशेषता है कि राकेश ने पौराणिक नाटकों के बजाय आधुनिक समस्याओं को आधुनिक जीवन व आधुनिक भाषा में खोजा है।

नाटक के अन्त में सावित्री का महेन्द्रनाथ के पास वापिस आना भी आधुनिक जीवन की 'स्थिति-प्रधानता' का

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

द्योतक है जहाँ हर पात्र स्थितियों से चालित होता है।

इस प्रकार राकेश का नाटक अपनी मौन भाषा, नाटकीय युक्तियों द्वारा आधुनिक शहरी जीवन की समस्याओं का खुला चित्रण करता है। इसी कारण कई आलोचक हिन्दी के आधुनिक नाटकों का आविर्भाव इसी नाटक से करने की बात कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हिंदी कहानी में उपस्थित जादुई यथार्थवाद पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जादुई यथार्थवाद आधुनिक कहानी में यथार्थवाद को प्रदर्शित करने की नई युक्ति है जिसका सर्वप्रथम प्रयोग लैटिन अमेरिकी लेखकों और विशेषत: 'गैब्रिल गार्सिया मार्केस' ने अपनी कहानियों में किया है।

इस युक्ति में कहानी में जादुई, अतिप्राकृतिक तत्वों, चमत्कारिक दृश्यों का सृजनात्मक प्रयोग यथार्थ को दिखाने के लिये किया जाता है।

हिन्दी में भी इस विधा का प्रयोग कई लेखकों ने किया है जिनमें सबसे प्रमुख है उदय प्रकाश व चंदन पांडेय।

सबसे पहले इस युक्ति का कुछ आभास 'पंकज बिष्ट' की कहानी 'बच्चे गवाह नहीं हो सकते' में दिखाई

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पड़ता है। किन्तु बाद में 'उदय प्रकाश' ने अपनी कहानी 'तिरिछ', 'दरियाई घोड़ा', 'धागा मूँगा और आम का बौर' में किया है। तिरिछ कहानी में उन्होंने तिरिछ के दुःस्वप्न के माध्यम से आधुनिक शहरी जीवन की समस्याओं का चित्रण किया है।

युवा कहानीकार 'चंदन पांडेय' ने भी अपनी 'झूलना' कहानी के माध्यम से जादुई यथार्थवाद का प्रयोग करते हुए आधुनिक जीवन के यथार्थ को पकड़ने में सफलता प्राप्त की है।

हालिया समय में कुछ अन्य कहानियाँ भी है जो इस विधा को प्रयोग में ला रही है। इसमें 'संजय स्वाती' की कहानी 'बापू की हड्डी' आदि प्रमुख है।

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार हिन्दी कहानी नित्य प्रयोगशील व सृजनशील रहते हुए विश्व की अनेक विधाओं का प्रयोग करते हुए कहानी ~~काल~~ कला के पक्षों को समृद्ध कर रही है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) जयशंकर प्रसाद और अज्ञेय की कहानी-कला की तुलना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation